R.B.K.
B.A Hons Economics Paper-V
Dr. Yadwendra Singh
Maharaja College, ARA

Question → Discuss the role of Population in economic development of a developing economy like India.

Answer → मानवीय साधन उत्पादन का सर्वाधिक सक्रिय और महत्वपूर्ण साधन होता है, जिसे आर्थिक क्रियाओं का साध्य और साधन दोनों कहा जा सकता है। एक ओर यह उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं के लिए मांग का स्रोत होता है तो दूसरी ओर जैसाकि Simon Kuznets ने कहा कि यह श्रम शक्ति की आपूर्ति कर अन्य साधनों के उपयोग की दिशा को निर्धारित भी करता है। वहीं इसके साथ (सृजनात्मक सोच) Creative minds और नये ज्ञान के आधार पर नयी तकनीक को विकसित करने का स्रोत भी होता है और वैज्ञानिक, आविष्कारक, प्रबंधक, अभियंता आदि की आपूर्ति को बढ़ाकर विकास प्रोत्साहन में प्रत्यक्ष योगदान भी करता है।

लेकिन दूसरी ओर Malthus के अतिरिक्त नव-माल्थसवादी और Limits To Growth Thesis या G.T.S. Model के प्रतिपादक अर्थशास्त्रियों के समूह ने यह धारणा व्यक्त की है कि जनसंख्या में तीव्र गति से वृद्धि आर्थिक विकास को प्रतिकूलतः प्रभावित करता है।

यद्यपि जनांकीकी-संक्रमण-सिद्धांत में यह माना गया है कि केवल जनसंख्या विस्फोट की अवस्था में जनसंख्या-वृद्धि आर्थिक विकास को बाधक होती है जब मृत्युदर तो घट चुकी होती है,

Scanned with CamScanner

लेकिन जन्मदर ऊँची होती है। ऐसी ही स्थिति भारत के ~~सबका अतिरिक्त~~ विश्व के अन्य विकासशील देशों में है। हालांकि R.T. Jain के साथ ~~अतिरिक्त~~ अनेक अर्थशास्त्रियों ने यह माना है कि जनसंख्या-वृद्धि ~~की~~ का आर्थिक विकास पर होनेवाला प्रभाव निर्भर करता है, अर्थव्यवस्था में साधनों की उपलब्धि, पूंजी की पूर्ति, तकनीकी स्तर, नव-प्रवर्तन की प्रवृत्ति आदि की स्थिति पर और इन्हीं संदर्भों में जनसंख्या-वृद्धि और आर्थिक विकास के संबंधों की समीक्षा की जानी चाहिए।

वास्तव में नवशास्त्रीय अर्थशास्त्रियों ने जनसंख्या और आर्थिक विकास के संबंधों की व्याख्या क्रम में कहा कि अगर जनसंख्या-वृद्धि के साथ पूंजी-निर्माण की गति में यथोचित स्तर की वृद्धि हो जाती है तो उसका विकास पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं होता है। अन्यथा जनसंख्या-वृद्धि के प्रभाव से भूमि पर दबाव बढ़ता है या अन्य उत्पादक कार्यों में भी उत्पत्ति ह्रास-नियम क्रियाशील होता है, प्रतिव्यक्ति आय घटती है, पूंजी-निर्माण भी घटता है और विकास गति धीमी पड़ जाती है। ऐसा ही विचार Prof. G.M. Meier का भी था। इन्होंने कहा कि जन-वृद्धि की तीव्र दर पूंजी-संचय की दर को कम घटाती है, लागत बढ़ाती है और उसका प्रभाव [illegible] होता है "resources go to the formation of population not to capital" जबकि H.W. Singer ने $D = SP - r$ के माध्यम से कहा कि जनसंख्या विकास का बाधक है। D: आर्थिक विकास की दर, S = बचत की दर, P = नये निवेश की उत्पादकता और r = जनसंख्या-वृद्धि की दर के सूचक होने पर D तथा r के बीच प्रतिकूल सम्बन्ध के माध्यम से यह स्पष्ट है कि जनसंख्या निम्नलिखित [illegible]

[illegible]

कारणों से विकास का बाधक बन जाती है →
① अर्थव्यवस्था की निवेश -
आवश्यकता को बढ़ाकर → Coale and Hoover
एवं अनेक अन्य अर्थशास्त्रियों ने माना कि जनसंख्या-
वृद्धि के साथ अर्थव्यवस्था में जनांकिकी - निवेश में
वृद्धि हो जाती है और विकास के उसी स्तर की प्राप्ति
के लिए अधिक कुल निवेश की आवश्यकता होती है जो
एक अल्पविकसित देश के बचत-सामर्थ्य से पूरा नहीं
किया जा पाता है। [फलतः निवेश-आवश्यकता और
निवेशीय विनियोग साधनों की उपलब्धि के बीच असंतुलन उत्पन्न
होता है। जैसे U.N.O. के द्वारा यह आंका गया कि
जनसंख्या में प्रति एक प्रतिशत वार्षिक वृद्धि की दशा
में राष्ट्रीय आय का 2 से 5% अधिक भाग निवेशित
करने की आवश्यकता होती है ताकि प्रतिव्यक्ति आय को
उसी स्तर पर बनाये रखा जा सके। जबकि J. J.
Spenglar का मूल्यांकन था कि प्रतिव्यक्ति आय में
3.2% वार्षिक वृद्धि के लिए राष्ट्रीय आय का 13.8%
भाग निवेशित करना होगा। अगर जनसंख्या-वृद्धि की
वार्षिक दर एक प्रतिशत की हो जो अल्पविकसित देशों
के बचत-सामर्थ्य से पूरा किया जाना संभव नहीं होता है
]
② जनसंख्या-वृद्धि पूंजी निर्माण की
दर को घटा देती है — Spenglar, Meier के अतिरिक्त
अनेक अर्थशास्त्रियों का यह मत है कि जनसंख्या-वृद्धि
पूंजी निर्माण के लिए प्रतिकूल होती है क्योंकि ऊँची
जन्मदर और अल्प प्रत्याशित जीवन आयु के कारण
आश्रित जनसंख्या का प्रतिशत ——→ - - -
ऊँचा हो जाता है और कार्यशील ——→ —

जनसंख्या का कम। फलतः बचत और पूँजी-निर्माण की क्षमता घट जाती है। [Spengler ने कहा कि जहाँ औद्योगिक देशों में प्रति तीन श्रमिक पर दो आश्रित होते हैं, वहीं अल्पविकसित देशों में तीन श्रमिकों पर चार आश्रित होते हैं। फलतः आश्रितों के ऊँचे अनुपात से आय का जो भाग पूँजी-निर्माण के लिए प्रयुक्त होता है वह ऐसे आश्रितों के लिए प्रयुक्त होता है जो उत्पादक नहीं है। फिर ऊँची शिशु-मृत्युदर के कारण बच्चे के पालन-पोषण पर किये गये व्यय भी बेकार हो जाते हैं जो अन्यथा उत्पादक होते। फिर जनसंख्या-वृद्धि प्रतिव्यक्ति पूँजी-उपलब्धि को घटाकर प्रति श्रम उत्पादकता को भी घटा देती है जिससे आय, बचत, पूँजी-निर्माण आदि का स्तर कुप्रभावित होता है]

(3) बड़ी जनसंख्या प्रतिव्यक्ति पूँजी-उपलब्धि को घटाती है और अल्प उत्पादकता के साथ उत्पादन ह्रास नियम को क्रियाशील बनाती है। विशेषकर भारत जैसे विकासशील देशों में जहाँ पूँजी की पूर्ति न केवल सीमित है बल्कि बेलोचदार भी है। Leibenstein ने भी कहा कि It dilutes the amount of capital with which the representative worker may operate.

(4) जनसंख्या-वृद्धि खाद्य-समस्या उत्पन्न करती है
→ जनसंख्या में तेजी से वृद्धि के साथ बढ़ी हुई मात्रा में खाद्यान्न की आवश्यकता होती है जिसे अल्पविकसित देश पूरा नहीं कर पाते हैं और पूरा करने के लिए विकसित
— — — देशों से आयात के लिए बाध्य होते हैं।
— — — फलतः विकास के लिए आवश्यक तकनीक

Scanned with CamScanner

सेवाओं, साधनों आदि के आधारभूत आवश्यक विदेशी विनिमय की उपलब्धि नहीं हो पाती है और विकास ~~हतो~~ हतोत्साहित होता है।

दूसरी ओर जनसंख्या - वृद्धि से खाद्य संकट के कारण कुपोषण, अल्पपोषण की समस्या उत्पन्न होती है जो निपुणता को घटाती है। ~~इसकी~~ और खाद्य जनसंख्या लोगों के जीवन स्तर घटा देती है, खाद्यान्न वस्त्र, आवास आदि की बड़ी मात्रा में आवश्यकता बढ़ाती है और साधनों का एक बड़ा भाग अपनी ओर खींचकर विकास को कुप्रभावित करती है।

(5) जनसंख्या - वृद्धि बेकारी की समस्या उत्पन्न करती है → जनसंख्या में तेजी से वृद्धि अर्थव्यवस्था को अनमुक्ति बेकारी, अल्परोजगार और अर्द्ध-रोजगार की स्थिति में धकेल देती है जो आर्थिक विकास को अवरोधित करने के साथ सामाजिक अशांति का कारण भी बनती है। इसप्रकार जनसंख्या - वृद्धि से आर्थिक विकास अनेक रूपों में प्रतिकूलतः प्रभावित होती है।

लेकिन अर्थशास्त्रियों का एक समूह जिसमें आधुनिक जनांकीकी - सिद्धांतवादी Karl Sax, Saxton, Leandry आदि महत्वपूर्ण है, की राय में आर्थिक विकास पर जनसंख्या का प्रभाव होने के साथ जनसंख्या - वृद्धि पर भी आर्थिक विकास का प्रभाव होता है जो मुख्य रूप से जन्मदर, मृत्युदर और देशान्तरण के माध्यम से अपना प्रभाव डालता है। जैसाकि Coale and Hoover ने भी माना। दूसरी ओर Simon ~~Kuznets~~ Kuznets की भी यह धारणा थी कि आधुनिक समाज में — — — — — — — —
आर्थिक विकास के साथ मृत्युदर और — — — — — —

(6)

कालान्तर में जन्मदर में कमी की प्रवृत्ति उत्पन्न हुई है और उसके कारण जनसंख्या-वृद्धि की दर पर भी नियंत्रण हुआ है। [आर्थिक विकास का जनसंख्या-वृद्धि पर प्रभाव की व्याख्या जनांकिकी-संक्रमण सिद्धांत के माध्यम से की जाती है जिसे Thompson, Notestein आदि ने प्रस्तुत करते हुए तीन अवस्थाओं का विश्लेषण किया जबकि Karl Sax ने चार अवस्थाओं का। विकास की प्रारंभिक अवस्था में जन्मदर और मृत्युदर दोनों ऊँची होती है, दूसरी अवस्था में विकास के प्रभाव से महामारियों पर नियंत्रण के कारण मृत्युदर घटती है लेकिन जन्मदर के यथावत रहने के कारण जनसंख्या-विस्फोट की स्थिति उत्पन्न हो जाती है, तीसरी अवस्था में जन्मदर भी भी घटने लगती है लेकिन विस्फोट की स्थिति समाप्त नहीं होती है और विकास की चौथी अवस्था में जन्मदर घटकर मृत्युदर के बराबर हो जाती है और दोनों का स्तर काफी नीचे भी आ जाता है। स्पष्ट है कि जनसंख्या से आर्थिक विकास का प्रभावित होने का संबंध केवल ऋणात्मक प्रभाव से ही जुड़ा हुआ नहीं रहता है बल्कि] [R.T. Gill और [illegible] अनेक अन्य अर्थशास्त्रियों की यह धारणा उपयुक्त है कि जनसंख्या-वृद्धि के साथ अगर उसका गुणात्मक स्तर भी [illegible] उन्नत होता है, अन्य साधनों की उपलब्धि का स्तर भी बढ़ाया जाता है तो प्रतिकूल प्रभाव का होना सर्वथा आवश्यक नहीं। यद्यपि भारत के अतिरिक्त South Asia के अधिकांश देशों में यह समस्या उग्र रूप धारण कर रही है और विकास की सबसे बड़ी और मौलिक बाधा बन गयी है।

Scanned with CamScanner